Name of scholar: Yogesh Pandey **Notification no**: 567/2024

Name of Supervisor: Prof. Kahkashan Ahsan Saad **Date of Award**: 24-09-2024

Name of Department: Hindi

शोध विषय: SAMKALEEN HINDI KAVITA MEIN POONJIVADI SANSKRITI AUR VYAKTI KE SANGHARSH KA AALOCHNATMAK ADHYAYAN (VISHESH SANDARBH 1990-2005)

Keywords : पूँजीवाद, समकालीनता, व्यक्ति का संघर्ष, उपभोक्तावादी संस्कृति, अस्मिता, प्रतिरोध

Findings

शोध में समकालीन हिन्दी कविता का विश्लेषण करने के बाद कहा जा सकता है कि पूँजीवादी संस्कृति में व्यक्ति का जीवन विविध संघर्षों से भरा हुआ है। पूँजीवादी संस्कृति उपभोक्तावादी और भूमंडलीय संस्कृति है। लाभ-हानि से इतर इसमें नैतिकता का स्थान नगण्य ही रह गया है। इसका प्रमुख ध्येय किसी भी तरह उपभोक्ता (व्यक्ति) को प्रभावित कर अपनी तरफ आकर्षित करना है जिसके लिए विज्ञापन, बाज़ार आदि साधनों का प्रयोग किया जाता है। पूँजीवाद अपने मुनाफे से जुड़ी वस्तु को पॉपुलर बनाकर अन्य सभी वस्तु, भाव, मानवीय संबंधों, कला आदि को बाज़ार द्वारा निश्चित छवि में ढालता है और भारतीय संस्कृति, कला , व्यक्ति आदि सभी पर आक्रमण कर उसकी पहचान को नष्ट करने का प्रयास करता है। समकालीन हिन्दी कवि नष्ट होती पहचान को बचाने और अस्तित्व के संकट से संघर्ष करते व्यक्ति के पक्ष में कविता लिखता है। यही कारण है कि समकालीन हिन्दी कविता पूँजीवादी व्यवस्था की विरोधी और जनवादी चेतना की कविता कही गयी है।

पूँजीवादी संस्कृति वैश्वीकरण, निजीकरण और भूमंडलीकरण के रूप में आज उपस्थित है जिसे नव-उपनिवेशवाद भी कहा गया है। इसमें एक ध्रुवीय बाज़ार-शासन स्थापित कर व्यक्ति के छोटे-छोटे सुखों को छीन लिया गया है जिससे व्यक्ति के भीतर अशांति और झुंझलाहट उत्पन्न होती है। बाज़ार के नित नवीन परिवर्तन से व्यक्ति के जीवन का प्रत्येक क्षण खांचे में बँट गया है और उसको मशीनी जीवन जीने को विवश किया गया है। समकालीन कवि बाज़ार के तमाम अमानवीय प्रस्तावों को ठुकरा कर मनुष्य की ओर से घोषित करता है कि उसे प्रदर्शन की चीज़े नहीं चाहिए बल्कि सिर्फ इतना चाहिए की व्यक्ति की जरूरतें भी पूरी हो सकें और उसके भीतर मानवीयता भी बची रह जाए।

नब्बे के बाद पूँजीवादी संस्कृति को प्रचारित करने में सर्वाधिक योगदान बाज़ार का रहा है। बाज़ार का निर्माण व्यक्ति की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए हुआ था परन्तु आज वह जरूरतों को गढ़ता है। चकाचौंध दिखाकर व्यक्ति को अपनी तरफ आकर्षित करता है। व्यक्ति अपनी क्रय-विक्रय शक्ति को जानता हुआ भी बाज़ार की तरफ आकर्षित होता है जिससे उसके भीतर अनस्थिरता और भय जन्म लेता है। विज्ञापन के माध्यम से समाज में जो भ्रम पैदा किया जाता है उसमें गलत चीजों को अधिक से अधिक प्रचारित कर उसे सही सिद्ध करने का प्रयास किया जाता है। यही पूँजीवादी संस्कृति का मूल आधार है। चमत्कारों के माध्यम से एक नयी दुनिया तैयार कर चकाचौंध में भारतीय संस्कृति का लुप्त होते जाना समकालीन कवि चित्रित करता है। सांस्कृतिक द्वंद्व के साथ मानवीय मूल्यों के विघटन और व्यक्ति की पीड़ा को भी अभिव्यक्ति देने से कविता नहीं चूकती है।

पारिवारिक विघटन से उपजी सांस्कृतिक और मानवीय पीड़ा को भी कवि महसूस करता है। यह विघटन व्यक्ति को अकेला कर देता है। व्यक्ति स्वयं भीतर और समाज में कुछ खोया हुआ महसूस करता है किन्तु उसकी पहचान नहीं कर पाता क्योंकि पूँजीवादी संस्कृति उसके सोचने-समझने की शक्ति को क्षीण कर देती है। इस स्थिति से उत्पन्न विवशता और टीस समकालीन कविता में देखने को मिलती है जिसका सबसे उग्र रूप शहरों और महानगरों में दिखाई पड़ता है। समाज और व्यक्ति की इस विडंबना और त्रासदी को कवि स्पष्ट रूप से पहचानता है और बार-बार अपनी बचपन की स्मृतियों में चला जाता है जहाँ उसका गाँव है, घर है, जंगल है, पूर्वज हैं और उसकी अपनी संस्कृति है, अपनी पहचान है। सभी लोग उसके अपने हैं। वह अकेला नहीं है बल्कि सभी के साथ जुड़ा हुआ है।

समकालीन हिन्दी कविता में व्यक्ति के संघर्ष से उत्पन्न स्वर स्पष्ट ही सुना जा सकता है। यह संघर्ष न सिर्फ पूँजीवादी संस्कृति के प्रतिरोध में है बल्कि भारतीय संस्कृति में विद्यमान रूढ़ियों के प्रति भी कवि अपना विद्रोही स्वर मुखरित करता है। पूँजीवादी दौर में मध्यवर्ग की पीड़ा और जिजीविषा से जुड़कर कवि उसे कविता में चित्रित करता है। स्त्रियों और दलितों से संबंधित कविताओं में भी अपने युगों के शोषण और पूँजीवादी प्रभाव को चित्रित किया गया है। आदिवासी कविताओं में उनके सांस्कृतिक संकट को पहचानने का प्रयास किया गया है साथ ही बाज़ार द्वारा उनके संसाधनों के अंधाधुंध दोहन पर भी प्रकाश डाला गया है। सांस्कृतिक विघटन से व्यक्ति के भीतर उत्पन्न बेचैनी को कविता नयी भाषा और शिल्प के माध्यम से सामने लाती है। समकालीन हिन्दी कविता सांस्कृतिक ह्रास के कारणों को पहचान कर मनुष्य के पक्ष में सामने आती है और समाज को अधिक मानवीय बनाने के लिए प्रेरित करती है।